!! श्री हरिदास !!

आवेदन - पत्र

गया श्राद्ध / दिनांक 4 फरवरी - 6 मार्च 2019

१. श्रद्धालु नाम : पुरुष .... आयु ..... दिनांक .....

२. श्रद्धालु नाम स्त्री ..... आयु ..... आवेदन राशि .....

जमाकर्ता का नाम ..... जमा राशी का प्रकार (अ) बैंक / (ब) इन्टरनेट .....

३. स्थाई पता : .....

क़स्बा / शहर ..... . तहसील ..... जिला ..... राज्य.....

देश..... पिन कोड ..... स्थाई मोबाइल नम्बर ..... ईमेल .....

४. क्या आप गया तीर्थ पहली बार आ रहे हे ? अगर आप पहले आ चुके हे तो आपका अनुभव ?

.....

५. आपको यह जानकारी मिलने के बाद केसा लगा ?

.....

६. आप ग्रुप सहित आना चाहते हे या एक जोड़ा ?

.....

७. आवेदन अनुदान राशि किस नाम से, कितनी और कितने व्यक्तियों के लिए जमा करवाई !

.....

८. आप सुबह कितनी बजे आंएगे और कितनी बजे वापिस प्रस्थान करेंगे ? यात्रा में कितने समय का सफर रहेगा ?

.....

९. आपका अमूल्य सुझाव और " मोक्ष धाम गया तीर्थ" के बारे में आपकी उचित जानकारी हेतु उचित प्रश्न ?

.....

१०. समय कि पाबंदी और नियमो का पालन अनिवार्य रहेगा! कृपया आवेदन करने के पहले निर्णय लेले, क्यू कि दुनिया जीतना बहुत ही आसन हे, लेकिन स्वंय के मन पर कंट्रोल रख पाना बहुत ही कठिन! आप यहाँ तीर्थ स्थान में आ रहे हे, कृपया उसका ध्यान रखे! नियम और शर्ते awesomeorg.com के रहेंगे! कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद किसी प्रकार का कोई न्यायक्षेत्र नही रहेगा! धर्म का आनंद लाभ उठायें ! *नियम और शर्तें लागू

नियम - शर्ते और कार्यक्रम विस्तार

आपके द्वारा दी गई अनुदान राशि के अंतर्गत आपकी सारी व्यवस्था, पण्डित जी की दक्षिणा, गायत्री मन्त्र अनुष्ठान, श्री मदभागवत पाठ अनुष्ठान, श्री मदभागवत कथा का पारायण अनुष्ठान, श्री भागवत द्वाद्सोक्षर मन्त्र - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - का जाप और अनुष्ठान, संध्याकालीन संगीतमयी साप्ताहिक श्रीमद भागवत कथा, आपके शहर क्षेत्र के गया तीर्थ पुरोहित की दक्षिणा, गौ दान, अन्न दान, स्वर्णदान, वस्त्र दान, पात्र -दान, ब्राह्मण भोज, श्री विष्णु पाद भेंट, भोगराग रसीद, गया श्राद्ध पिंडदान सामग्री, त्रिपिंडी श्राद्ध सामग्री सहित समस्त होने वाले सम्पूर्ण कार्य आ जाते हे, अतः श्रद्धालुओ से निवेदन हे कि अन्य कोई खर्च की यहाँ आवश्यकता नहीं होगी, आगे आपके विवेक पर निर्भर करता हे, विशेष सुचना - हमारे संगठन के किसी भी अधिकारी, सदस्य या कार्यकर्ता को किसी प्रकार का कोई दान भेंट नही दे !

१. कृपया वही भक्त श्रद्धालु गया तीर्थ के लिए आवेदन करे, जिसे चार से साड़े चार घंटे तक पालकी लगाकर बेठने और पिंडदान करने में, चलने में समस्या न हो, बेठने में असमर्थ और नेतागिरी हुकूमत पसंद व्यक्तियो से हाथ जोड़कर निवेदन हे कि आप आवेदन नहीं करे,यह कार्यक्रम आत्मियता से आत्माओ कि मुक्ति हेतु रखा गया हे! २. कृपया तर्क करने और श्राद्ध कर्म पर विश्वास नहीं करने वाले श्रद्धालु आवेदन नहीं करे ! यह एक सात्विक और आत्मिक आयोजन हे, सहयोग करने का कष्ट करे !

३. एक आवेदन के साथ एक परिवार के दो ही भक्तो की व्यवस्था रहेगी, कृपया इस विषय पर कोई बात नही करे, अगर फिर भी एक से ज्यादा व्यक्ति आते हे तो वह आपकी अपनी जिम्मेदारी होगी, कृपया व्यवधान उत्पन्न करने के बाद मानवीय सहयोग की अपेक्षा ना करे और फिर हमारी उपेक्षा भी न करे !

४. आने और जाने की समय की पाबंदी का ध्यान आप सभी भक्तो को स्वंय ही रखना होगा, कार्यक्रम मे देरी से पहुँचने के कारन होने वाले पूण्य लाभ का नुकसान या परेशानी के जिम्मेदार आप स्वंय होंगे ! समय से पहुंचे, और प्रस्थान करे ! शिकायत का अवसर नही दे! (आपके प्रस्थान करते ही आप ही के जेसे और भी श्रद्धालु भक्त आयेंगे, कृपया समय से अधिक रुकने के लिए हमे मजबूर न करे ! हम कोई मदद नही कर पाएंगे ! क्षमा !

५. यह आपके अपने ही कुल पूर्वजो और पितृ देवता का कार्य हे, तीर्थ पुरोहित द्वारा इस कार्यक्रम को यथावत आयोजित किया जायेगा, यहाँ आशीर्वाद लेने की भावना से आये ! अहंकार और आप कौन और कितने शक्तिशाली हैं? यह बताने के लिए आपके पास पूरा विश्व हे ! यहाँ नम्रता और सिर्फ सात्विकता बरते !

६. रुकने कि व्यवस्था में, एक कमरे में २ या ३ या अधिक श्रद्धालु परिवार तेयार होंगे , अधिक रकम और अधिक कीमती वस्तुए लेकर नहीं आये, गया जी से गया जी तक की सारी अनुदान राशि ३५५१/- में आ चुकी हे, यहाँ आपको उसके सिवाय एक रूपये की भी आवश्यकता नही होगी ! आयोजन के अलावा अन्य खर्च आपके अपने होंगे ! यहाँ आस्था और आत्मा का कार्यक्रम हे, धन दौलत का नही! वीआईपी व्यवस्था वाले भावना पैदा होने तक इंतजार करे !

७. "मोक्ष धाम गया तीर्थ" में आपको अनुदान राशि देने के बाद खाली हाथ आना हे, और ढेरो खुशिया लेकर जाना हे!

८. पूजा कार्य शुरू होने के बाद पहला विश्राम लगभग दो से ढाई घंटे बाद होगा. दूसरा और अंतिम विश्राम उसके लगभग डेढ़ घंटे बाद होगा, उसके बाद पिंडदान के लिए "फल्गु नदी" के एक किनारे से दुसरे किनारे तक जाना होगा, सीता कुण्ड एक किनारे पर हे श्री विष्णु पाद और अक्षय वट दुसरे किनारे पर , श्रद्धालुओं को पैदल चलना होगा!

९. सुबह आपके गया तीर्थ पहुँचते ही साधन तेयार मिलेगा आपको अपने ठहराव स्थान तक साधन से लाया जायेगा, उसके बाद स्वादिष्ट गरमा गरम ईलायची युक्त चाय की व्यवस्था रहेगी, स्नान के बाद फल और फलाहार खिचड़ी की व्यवस्था रहेगी, उसके बाद कार्यक्रम में पहुंचना होगा फिर कार्यक्रम के पूर्ण होने के तुरंत बाद शाम के भोजन प्रसाद की व्यवस्था रहेगी, जिसमे गरमा गर्म पुड़ी-सब्जी, मीठी बूंदी और नमकीन सेव का प्रसाद होगा, उसके बाद शाम ६ बजे से " श्री मदभागवत कथा का आयोजन रहेगा, (कृपया जिन श्रद्धालुओ को भागवत जी सुननी हे, वह पहले ही अपना नाम लिखवा दे),

१०. सम्पूर्ण कार्यक्रम से फ्री होने के बाद जाते समय आपको उपहार स्वरूप मानसिक तनाव से मुक्ति, ओर जीवन में आगे बड़ने की दिशा की और प्रेरित करता हुआ, आत्महत्या और जिन्दगी की खुशियों से जुडा, एक अनोखा चित्रात्मक संस्करण 500/- मूल्य का deathexplainer.com की और से उपहार और "गया-तीर्थ के महत्व और महात्मय की पुस्तक ५०/- मूल्य और अगले दिन सुबह सफर के मध्य किए जाने वाला भोजन प्रसाद सब्जी-पुड़ी, मीठी बूंदी और नमकीन सेव का प्रसाद साथ बाँध कर दिया जायेगा ! जिसके कारन आपको परेशानी ना हो !

११. कार्यक्रम पूर्ण होने के एक महीने बाद आपके स्थाई पते पर कार्यक्रम में आपकि उपस्थिति की डीवीडी भेज दी जायेगी, उसके पश्चात् श्री विष्णु पद जी का चरण चिन्ह वस्त्र पर अंकित फ्रेम सहित आपके स्थाई पते पर भेज दिया जायेगा ! (भेंट राशी १२१+ फ्रेम = निशुल्क)! इसके लिए धेर्य रखे, इसे आपके घर आते आते 9 से 10 महीने भी आसानी से लग सकते हे, क्यों कि श्री पाद का वस्त्र चरण चिन्ह सिर्फ शाम को पूजा के समय ही मिलता हे जिसकी एक दिन कि संख्या अधिकतर मात्र १०१ तक हो सकती हे अत: क्रमानुसार भेजा जायेगा, धेर्य रखे !

१२. समस्त नियम शर्ते और पाबंदी आपके ही कार्यक्रम और आपके ही शुभ फल के लिए की गई हे, गया तीर्थ आये और अपने अपने कर्मो सहित किस्मत को एक नयी दिशा प्रदान करने के भाव से यहाँ आये, और चमत्कारिक ख़ुशी का अनुभव आप स्वंय करे!

१३. पुरे भारत में ५२ जगह पिंडदान होते हे, लेकिन गया जी सबके बाद का मुख्य अंत हे, यहाँ सुहागन हो या विधवा दोनों स्त्रियाँ भी अपनी श्रद्धा से पिंडदान करके अपने पितरो का विशेष आशीर्वाद प्राप्त कर अपने कर्मो को मोक्ष की और मोड़ सकती हे, यहाँ यह वरदान हे! सीता माता ने अपने ससुर राजा दशरथ का पिंडदान यहीं किया था !

१४. **नियम और मर्यादायो का पालन करे ओर आपके अपने ही पूर्वजो और पितरो के कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करे!**

१५. **बुकिंग व्यवस्था पहले आओ पहले पाओ के आधार पर , कृपया किसी प्रकार का कोई दबाव को न सोचे, अगले कार्यक्रम तक कि प्रतीक्षा करे, भावना तो आपकी बन ही चुकी हे, अब आपको दिशा आपके अपने पितृ और पूर्वज देवता देंगे ! आप सिर्फ धेर्य रखे!**

आयोजित कार्य :- १. त्रिपिंडी श्राद्ध २. गया श्राद्ध ३. श्री भगवद्गीता का पाठ ४. श्रीमद भागवत कथा ५. गायत्री मन्त्र अनुष्ठान ६. श्री गीताजी का द्वाद्सोक्षर मन्त्र अनुष्ठान ! विद्वानों द्वारा !

व्यवस्था :- १. गया स्टेशन से लाना और ले जाना २. स्नान - चाय और फलाहार ३. संध्या का भोजन प्रसाद ४. तनाव मुक्ति हेतु रूपये 500 कीमत का चित्रात्मक संस्करण ५. कीमत 50 रूपये की गया तीर्थ और श्राद्ध कर्म की पुस्तक ६. श्री विष्णु पाद चरण चिन्ह चित्रित ७. कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति सहित आयोजन की कैसेट ८. अगली सुबह के लिए भोजन - प्रसाद बाँध कर !

इनके अलावा कोई व्यवस्था के लिए awesomeorg.com के लिए न बाध्य होगी न जिम्मेदार होगी !

किसी विशेष जानकारी के लिए आप हमे ईमेल कर सकते हे या सुझाव बॉक्स में आपके प्रश्न में आपकी समस्या ओर सुझाव दे सकते हैं!

सादर धन्यवाद

© All right reserved

@Awesomeorg.com !! इति शुभम !!

!! श्री हरिदास !!

प्राप्ति रसीद क्रमांक संख्या(खाली छोड़े)----------

१. श्रद्धालु नाम : पुरुष .... आयु ..... दिनांक .....

२. श्रद्धालु नाम स्त्री ..... आयु ..... आवेदन राशि .....

३. खाता संख्या SBI .....

जमाकर्ता का नाम ..... जमा राशी का प्रकार (अ) बेंक / (ब) इन्टरनेट .....

४. स्थाई पता : .....

क़स्बा / शहर .....तहसील ..... जिला ..... राज्य.....पिन कोड .....

देश..... ५.स्थाई मोबाइल नम्बर ..... ईमेल .....

हस्ताक्षर आवेदन कर्ता

!! श्री हरिदास !!

- **ख़ुशी आपके द्वार - Happiness @ your Doorstep**

Deepawali 07-11-2018 12:21:00PM**©awesomeorg.com**

*** सतयुग से लेकर द्वापर त्रेता और कलयुग तक के धार्मिक इतिहास में संभवतया पहली बार प्रत्येक परिवारों की ख़ुशी के लिए "*मोक्ष धाम गया तीर्थ*" में "भव्य" आत्मिक श्राद्ध तर्पण कार्यक्रम रखा गया है।***

*भारतदेश में कई सिद्ध और प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है और सबके अपने अपने महत्व है ! लेकिन गया तीर्थ का महत्व सबसे सर्वोच्च श्रेणी का हे, क्यू की गया तीर्थ की यात्रा और एक दिन के पिण्ड-श्राद्ध कर्म मात्र से पुत्र प्राप्ति सहित नाना प्रकार के सुख वैभव के द्वार खुल जाते हे, क्यू कि गया तीर्थ आत्माओं की मुक्ति का परम पावन तीर्थ है। विष्णु पुराण - गरुड़ पुराण - पद्म पुराण - वायु पुराण सहित अन्य कई पुराण वेद शास्त्रों में गया तीर्थ और तीर्थ में किये गए श्राद्ध कर्म के आशीर्वाद का अपना विशेष वर्णन सहित अपना विशिष्ट महत्व हे, गया तीर्थ श्राद्ध करवाने मात्र से जीवन में उन्नती के कई प्रामाणिक उदाहरण है, लेकिन आधुनिकता के बढ़ते प्रचलन के चलते इंसान सुख से दुःख की और अनायास ही बढ़ चुका है।

संपूर्ण ब्रह्माण्ड रूपी - विश्व के धार्मिक इतिहास में पहली बार ! "मोक्ष धाम गया तीर्थ" समस्त पितृ देवता की तृप्ति और समस्त परिवारों की ख़ुशी के लिए एक भव्य आयोजन किया जा रहा है*

हमारे भारत के कई कई परिवारों के लोग अकस्मात् और अकाल मृत्यु के कारण अपना अनमोल मनुष्य शरीर समय से पहले छोड़ चुके हे! कुछ लोग सोचते है कि आत्महत्या के बाद , इंसान दुःखो से मुक्त हो जाता है।

कुछ लोग अचानक दुर्घटना में म्रत्यु को प्राप्त हो जाते हे, जैसे सड़क - रेल - हवाई, जहाज : दुर्घटना, बम - दंगा - आतँकवाद - हत्या - आत्महत्या , इस तरह के अन्य कई कारणों से जीवित मनुष्य अचानक से कई कई प्रकार के कारणों से मृत्यु को प्राप्त हो जाता हे! दुर्घटना का शिकार *गर्भपात*, *भ्रूणहत्या* *प्राकृतिक आपदा*, *गर्भवती मृत्यु*, और *समस्त* *प्रकार* की *मृत्यु* से *मृत* *मृतआत्मा, ना चैन से नही रहती - ना ही वह चैन न से रहने देती। क्यू की उसकी आत्मा की मुक्ति उसे शास्त्रोक्त अनुसार ही चाहिए, इंसान के बनाये हुए नियम सिर्फ संसार और शरीर तक ही सीमित है, भटकती आत्मा अपने ही परिवार वालो से आशा और उम्मीद करती है कि कोई उसका त्रिपिंडी और गया श्राद्ध कर आये और उसके लिए जब वह अपने ही परिवार द्वारा तृप्त नही होती है तो उस कारन परिवार में कई कई तरह की समस्याएं उत्पन्न होती रहती है, कई लोगो का वंश नही बढ़ पाता, कई लोगो की शादी नही हो पाती, कई लोगो की शादी तो हो जाती है लेकिन पारिवारिक जीवन में सुख की जगह क्लेश आकर स्थायी निवास कर जम सा जाता है, मनुष्य समस्त दुःखो से हारकर पंडित और ज्योतिषों के पास जाता है, कई समझदार ज्योतिष समस्त दुःखो से मुक्ति पाने के और भविष्य में ख़ुशी को पाने की चाहत रखने वालों को पितृ दोष - नासिक कल सर्प दोष निवारण, उज्जैन में मंगलनाथ, हरिद्वार में नारायनशीला और इन "सबसे "प्रथम" और "अंत" मोक्ष धाम गया में फल्गु नदी , श्री विष्णुपाद , सीता-कुंड, और अक्षय वट स्थानों पर त्रिपिंडी और गया श्राद्ध श्रद्धा पूर्वक करने की सलाह देते है। और आज तक कई हजारो लाखो ऐसे मनुष्य हे जो यहाँ आकर आत्मा से अपने परिवार के अकस्मात मृत्यु से भटक रहे लोगो की आत्मा की मुक्ति के उद्देश्य से यहाँ आते है और आश्चर्यजनक परिणाम पाकर खुश रहते है और कई व्यक्ति तो ऐसे हे जो प्रतिवर्ष यहाँ आकर त्रिपिंडी और गया श्राद्ध करवाने आते है। गया श्राद्ध का महत्व कई ग्रंथो में मिलता है, रामायण युग में "श्री राम" "सीता माता" और "लक्ष्मण" सहित अपने पिताजी "राजा दशरथ" की मृत्यु उपरान्त मोक्ष धाम गया (बिहार) में ही आये थे, उसी दिन सीता माता ने "गाय" "फल्गु नदी" ,'केतकी' के फूल, और "ब्राह्मण" को श्राप दिया था, (पूरी कहानी के लिए यहाँ क्लिक करें) ! वही जगह "सीता कुंड" के नाम से आज

प्रसिद्ध भी हे। उसी के पास फल्गु नदी है, जिसका विशाल सुन्दर स्वरूप और अपार मुक्ति दिलाने की महिमा होने पर भी श्राप के कारण उसमे कभी जल नही रहता। भारत देश के अधिकाँश घरों में आज कोई न कोई समस्या बनी रहती है ! और "उन्हीके परिवारों में से उन्ही का कोई पुराना या नया मनुष्य," ऊपर वर्णित कई कारणों से अचानक अकस्मात और अकाल मृत्यु से मृत होता है, शास्त्रानुसार जिस अकाल मृत्यु से मृत शरीर की आत्मा को जब तक शांति नही मिलती, जब तक उसके वंश - कुल परिवार का व्यक्ति उस भटकती आत्मा की शांति " मोक्ष तीर्थ धाम -गया (बिहार) में नहीं करा देता। गरुण पुराण , विष्णु पुराण, रामायण के साथ विश्व में सबसे प्राचीन धर्म, सनातन धर्म के कई ग्रंथो और पुराणों में अकाल मृत्यु और गया में भटकती मुक्ति का उल्लेख है जो की सतयुग से शास्त्रोक्त वर्णित है, लेकिन !! दुर्भाग्य वश आज के कई शिक्षित वर्ग ने और उनकी युवा संतानों ने इन बातों को मानना छोड़ दिया, और अफ़सोस " इंसान ने शाश्त्रो को मानना छोड़ दिया, तो! शास्त्रो ने मनुष्य को अपनाना छोड़ दिया, लेकिन उस से बड़ा अफ़सोस यह कि इंसान शरीर के सुरक्षित रहते हुए इन बातों को नहीं मानता लेकिन अंत में समस्त प्रकार के उपाय और सारे हथकंडे अपनाने के बाद थक हारने के बाद, मजबूर होकर अपने परिवार कुल में अकाल मृत्यु से भटकते हुई आत्मा की मुक्ति हेतु " श्री "मोक्षधाम-गया" श्राद्ध और त्रिपिण्डी करवाने आता हे। काश वही इंसान समय रहते हुए पहले ही सम्भल जाये और विनाशः जैसी स्थिति आने से पहले, अपने ही कुल परिवारों में मृत भटकती आत्माओं की मुक्ति हेतु का पहले ही सोच ले, मात्र मन में संकल्प बनाने मात्र से चमत्कार दिखाई देने लगता है, क्यू की जब उस आत्मा को यह आभास होता है कि मैरे अपने कुल के लोग मैरी मुक्ति करवाने आने वाले हे तो वह आत्मा पहले ही प्रसन्न होकर क्रोधित और बुरे की जगह आशीर्वाद देने लग जाती है, क्यू की उसे उसकज मुक्ति नजदीक महसूस होती है। यह सारी बाते चाहे पड़ने - समझने - सुनने में अजिब और आश्चर्यचकित जैसी लगे। लेकिन सारे शास्त्रानुसार ख़ुशी को निमंत्रण देने की शुरुआत करने का सत्य सिर्फ यही है । इंसान के मानने या ना मानने से, ग्रन्थों में लिखा आत्मा का संबंध और मुक्ति का सच, सच ही रहता, उसे जिंदा इंसान के मानने या ना मानने से कोई फर्क नही पड़ता, क्यों की यह विषय जिन्दा रहने तक का नही बल्कि शरीर की मौत और उसके बाद की शुरुआत का हे।*

*संपूर्ण विश्व में*कई ऐसे परिवार हे जिनके परिवारों में कोई अकाल मृत्यु से मृत हुआ है और उनके परिवारों से कोई भी उस आत्मा की मुक्ति हेतु गया जी नहीं आया, इसके कई कारण हो सकते हे, जैसे या तो कई लोगो को " मोक्ष धाम गया का महत्व ही ज्ञात नही है, या फिर कई लोग आना चाहते लेकिन कई नाना प्रकार के असमंजस के कारण यँहा तक नही पहुँच सकता, गया श्राद्ध का कुल खर्च साधारणतः 4100 रूपये से लेकर 51000 तक होती है, 51000 वाले में श्रीमद भागवत जी उस मृतआत्मा के लिए की जाती है, यह अपनी अपनी आर्थिक परिस्थिति पर निर्भर करता है*।

***विश्व के इतिहास में पहली बार *श्री*मोक्षधाम* *गया* (*बिहार*) *में* *विशाल कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है*जिसकेअंतर्गत**

१.*त्रिपिंडी*तर्पण*

२.*गया*श्राद्ध*

३. *श्रीमदभागवत कथा का पारायण अनुष्ठान*

४.*श्रीभगवद्गीता का पारायण अनुष्ठान*

५.*ॐनमोभगवतेवासुदेवायः**द्वादसोक्षर मन्त्र अनुष्ठान*

६.*वेदमाता गायत्री मंत्र अनुष्ठान*

.*श्रीमदभागवत कथा संगीतमयी प्रति सप्ताह अनुष्ठान*

(*प्रसारण संभवतया आस्था चैनल पर)

AWESOMEORG.COM भटकती हुई और कई प्रकार की अधूरी इच्छाओं से अतृप्त आत्माओं की मुक्ति, और समस्त परिवारों के खुशहाली के लिए , विश्व के समस्त ऐसे परिवारों को सादर आमंत्रीत करता है, जिनके परिवारों में पुराने या नए समय में किसी की अकाल मृत्यु हुई हो। *उन भटकती हुई आत्माओं की मुक्ति हेतु,मोक्ष धाम गया में कई विद्वान पंडितों द्वारा भव्य सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।* *जिसकी अनुदान राशि मात्र 3551/- रखी गई है। इसके अंतर्गत देश से विदेश के भक्त श्रद्धालुओं के लिए समस्त व्यवस्था AEESOMEORG.COM द्वारा होगी। जिसके अंतर्गत गया स्टेशन से- ठहरने तैयार होने की जगह तक का वाहन, स्नान के लिए गर्म पानी, स्वादिष्ट चाय, फलाहार, खिचड़ी भरपेट व्यवस्था, उसके बाद एक तय समय पर फल्गु नदी में त्रिपिंडी तर्पण, उसके बाद गया श्राद्ध, उसके बाद 1.सीता कुंड, 2.फल्गु नदी, 3.अक्षय वट और 4.मुख्य " श्री विष्णु पाद" में पिंड दान, उसके तुरंत बाद , गर्मा-गर्म स्वादिष्ट पूड़ी-सब्जी, मीठी बूंदी और नमकीन सेव का भरपेट भोजन, तत्पश्चात श्री मद् भागवत कथा श्रवण और उसी रात अपने प्रस्थान के समयानुसार, रुकने के स्थान से गया स्टेशन तक का वाहन और जाते समय 500 रूपये कीमत का एक अनूठा चित्रात्मक मानवीय आत्मिक संस्करण, गया महात्म्य की 2 पुस्तकें और दो व्यक्तियों के भोजनानुसार एक समय की पूड़ी-सब्जी, मीठी बूंदी और नमकीन सेव अगली सुबह के लिए , और गया तीर्थ पंडित जी के शुभ आशीर्वाद सहित समस्त भिन्न भिन्न जगहों से आये हुए महानुभावो को विदाई देने तक की व्यवस्था **AWESOMEORG.COM** और **स्थानीय तीर्थ पुरोहित पंडित जी श्री माखन लाल जी बारिक (सोने के कड़े वालो) गया धाम, द्वारा की जायेगी।** उसके पश्चात एक महीने तक इस कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति और आपके कार्यक्रम की वीडियो कैसेट और साथ में समय और उपलब्धता के आधार पर श्री विष्णु पाद गया तीर्थ का भगवान श्री विष्णु का चरण वस्त्र फ्रेम श्री विष्णु भगवान की विशेष कृपा और पूजा हेतु, सबको अपने अपने पते पर भेज दिया जायेगा।*

1.आपकेअपने घर के गया तीर्थ पुरोहित जी की भेंट,

2.कर्म करवाने वाले पंडित जी की दक्षिणा,

3.गौ दान,

4.वस्त्र दान,

5.अन्न दान,

6.विष्णुपाद भेंट,

7.भोगराग रसीद,

8.वाहन,

9.भोजन,

*10.श्री मद भागवतगीता जी,*और कथा *

11.गायत्री मंत्र और अन्य समस्त जप पारायण अनुष्ठान

*12.तनाव मुक्ति संस्करण 13. दो व्यक्तियों के कुल तीन समय के भोजन प्रसाद सहित समस्त गया तीर्थ श्राद्ध तर्पण की कुल सेवा दान राशि मात्र **3551/-** रखी गई है!*

वितरण और कार्यक्रम भागीदारी सर्वप्रथम बुकिंग "पहले आओ पहले पाओ " के आधार पर, लिमिटेड संख्या होने के कारण इस कार्यक्रम में एक निश्चित प्रतिदिन दस हजार से ज्यादा संख्या को शामिल बाद में आवेदन करता को शामिल नहीं किया जा सकेगा। पहला आयोजन 4 फरवरी 2019 से 6 मार्च 2019 सोमेती अमावस्या से शुरू होकर अगली अमावस्या तक "तीर्थ श्राद्ध" कार्यक्रम का विशेष आयोजन रखा गया है।

बुकिंग 12 नवम्बर से शुरू। समस्त अतृप्त आत्माओं की मुक्ति और समस्त परिवारों की ख़ुशी मात्र ही हमारा मुख्य उद्देश्य और स्वार्थ हे।

समस्त भारतीयो के लिए ख़ुशी की शुरुआत।**आवेदन करने के लिए www.awesomeorg.com पर सम्पर्क करें।